RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-12 इतिहास

हिंदी माध्यम

ARJUN BATCH

यात्रियों के नजरिये

Chapter-5 | Part-5



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?



1. बर्नियर तथा अपविकसित पूर्व
2. भूमि स्वामित्व का प्रश्न
3. गरीब किसान
4. यूरोप के लिए एक चेतावनी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

फ्रांस्वा बर्नियर

फ्रांस
↳ 17वीं → मुगल → शाहजहां



क्या → नकारात्मक (-ve)

- पूर्व (अविकसित)
- राजा (-)
- कृषि ↓
- निजी भूमि ×

बर्तियर → निजी भूमि ★ ✓

Q

↓ ↓

यूरोप

निजी भूमि ✓ × ① प्रोत्साहन (+)

↓

काम ↓

→ भारत



→ आर्थिक ↓

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

14 वी.

इब्नबतूता

↓

कृषि

→ ① उत्पादन

→ ② 2 फसलें

17 वी.

बर्नियर

↓

कृषि ↓

→ निजी ×

→ ज़मीन → बंजर

→ दलदल

→ किसान गरीब

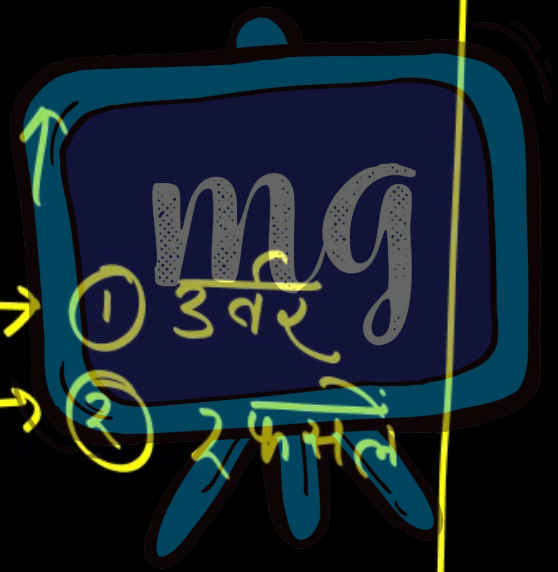

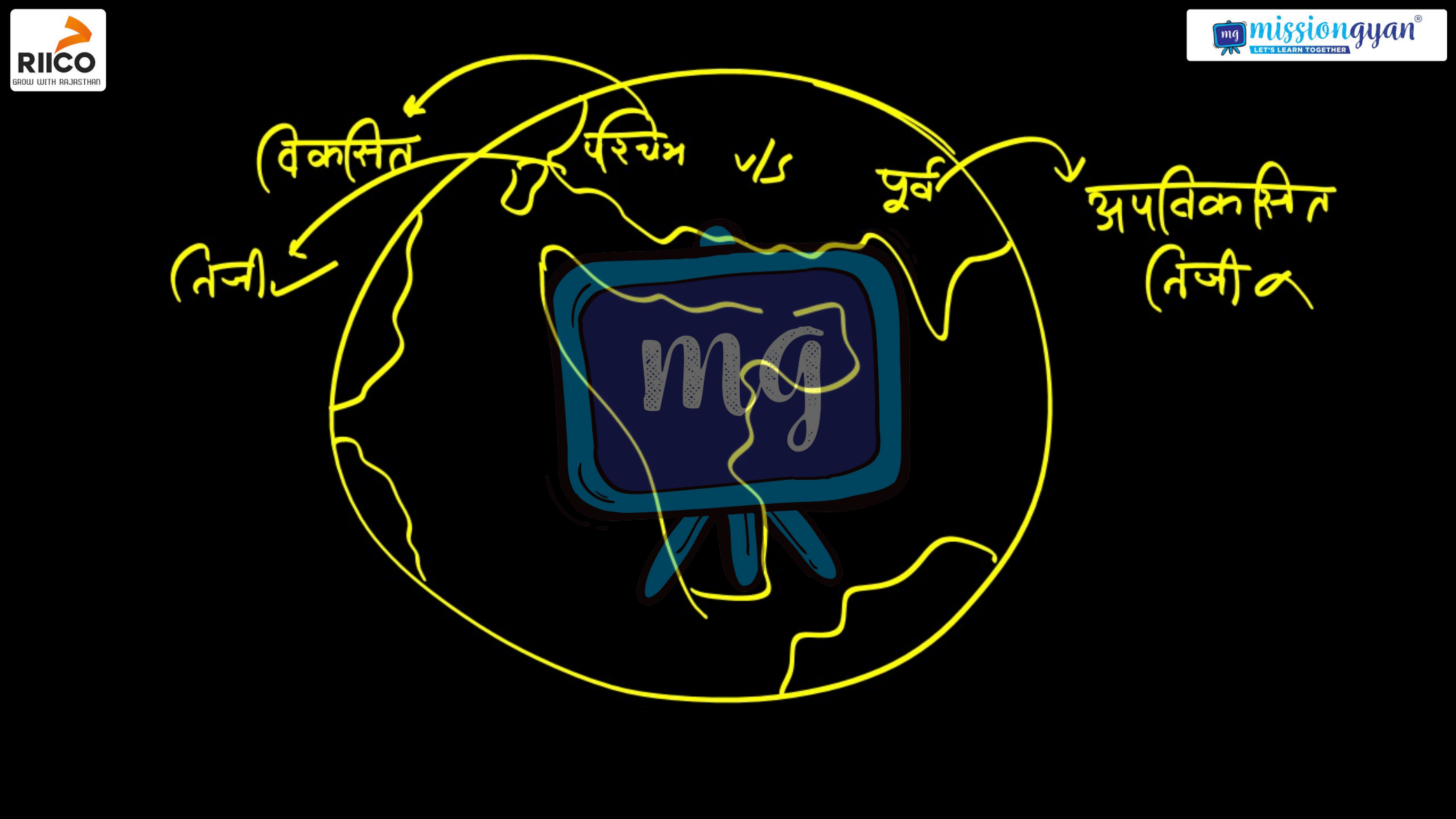
विकसित
पश्चिम
v/s
पूर्व
निजी
अपविकसित
निजी

यात्रियों के नजरिए



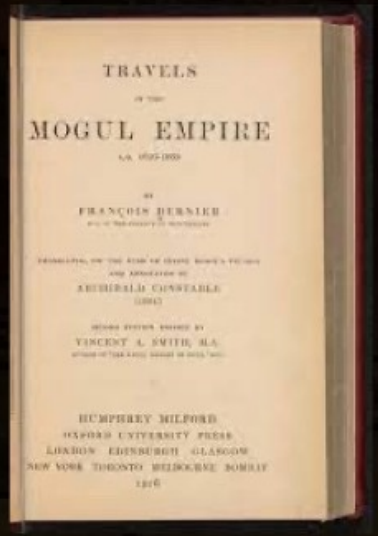

बर्नियर तथा अपविकसित पूर्व :-

- बर्नियर की पुस्तक/यात्रा वृत्तान्त : ''ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर''
- बर्नियर व इब्न बतूता के वर्णन में मूलभूत अन्तर है।
- इब्न बतूता ने अपने वर्णन में हर उस चीज को शामिल किया है जो अनूठेपन के कारण उसे प्रभावित करती है।

यात्रियों के नजरिए

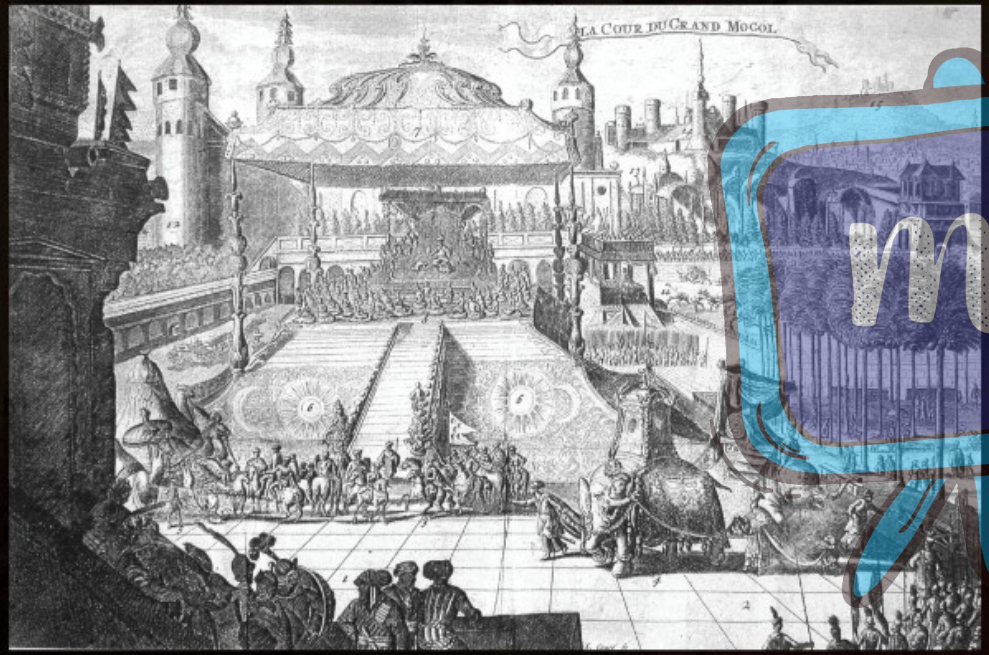

- बर्नियर ने भारत में जो देखा उसकी तुलना यूरोप से तथा विशेष रूप से फ्रांस से करता था तथा भिन्नता को उजागर करने में अधिक रूचि रखता था।
- उसका विचार नीति-निर्माताओं तथा बुद्धिजीवियों को प्रभावित करने का था जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे ऐसे निर्णय ले जिन्हें वह "सही" मानता था।

यात्रियों के नजरिए

- बर्नियर द्वारा लिखित ग्रन्थ ''ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर'' अपने गहन प्रेक्षण, आलोचनात्मक अंतदृष्टि तथा गहन चिन्तन के लिए उल्लेखनीय है।
- पुस्तक में निरन्तर मुगलकालीन भारत की तुलना यूरोप से की जाती रही है।
- तथा यूरोप को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया गया है।

यात्रियों के नजरिए

- बर्नियर के वर्णन में भारत को यूरोप के "प्रतिलोम" के रूप में दिखाया गया है या फिर यूरोप का 'विपरीत' जैसा।
- उसका सम्पूर्ण वर्णन इस प्रकार का है कि पश्चिमी दुनिया को भारत निम्न कोटि का प्रतीत होता है ।

यात्रियों के नजरिए

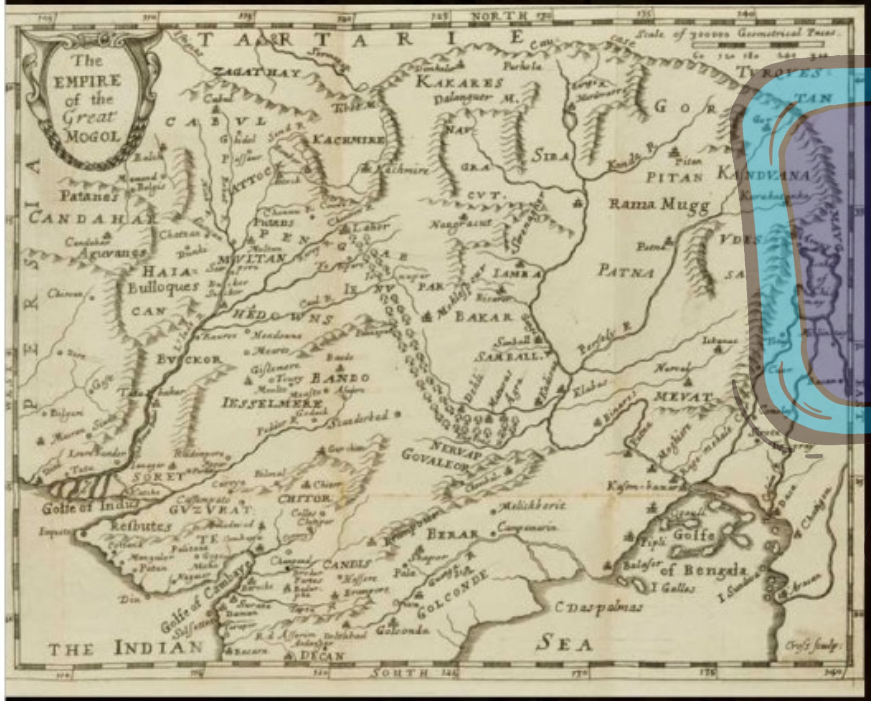

भूमि स्वामित्व का प्रश्न :-

- बर्नियर के अनुसार भारत व यूरोप के बीच मूल भिन्नताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था।
- उसका निजी स्वामित्व के गुणों में दृढ़ विश्वास था।
- वह भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य व निवासियों दोनों के लिए हानिकारक मानता था।
- उसके अनुसार मुगल साम्राज्य में सम्राट सारी भूमि का स्वामी था जिसे वह अमीरों को बांटता था।

यात्रियों के नजरिए

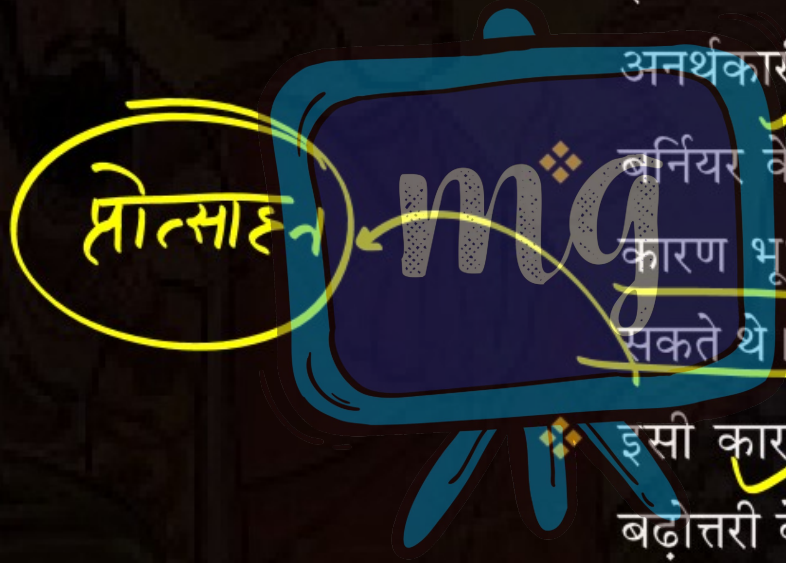

- इससे अर्थव्यवस्था और समाज के लिए अनर्थकारी परिणाम होते थे।
- बर्नियर के अनुसार राजकीय भू-स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे।
- इसी कारण उत्पादन स्तर को बनाये रखने व बढ़ोत्तरी के प्रति उदासीन रहते थे।
- भूमि के रख-रखाव व बेहतरी का प्रयास नहीं हो पाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए

- इस प्रकार निजी भूस्वामित्व के अभाव ने बेहतर भूधारकों के वर्ग के उदय को रोका जो भूमि के रखरखाव व बेहतरी के प्रति सजग रहते।
- इसी के चलते कृषि का समान रूप से विनाश होता गया।
- किसानों का असीम उत्पीड़न।
- समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में लगातार पतन की स्थिति उत्पन्न हुई सिवाय शासक वर्ग के।

यात्रियों के नजरिए

- इसी के वर्णन में बर्नियर भारतीय समाज को दरिद्र लोगों के समरूप जनसमूह के रूप में वर्णित करता है।
- बर्नियर का विश्वास था कि भारत में बहुत अमीर व गरीबों (दरिद्रों) के मध्य की स्थिति के लोग नहीं थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बर्नियर के अनुसार फ्रांस (यूरोप) और भारत के बीच मूल भिन्नता क्या थी?

Q. बर्नियर के अनुसार भारत में मध्यम वर्ग का अभाव था?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

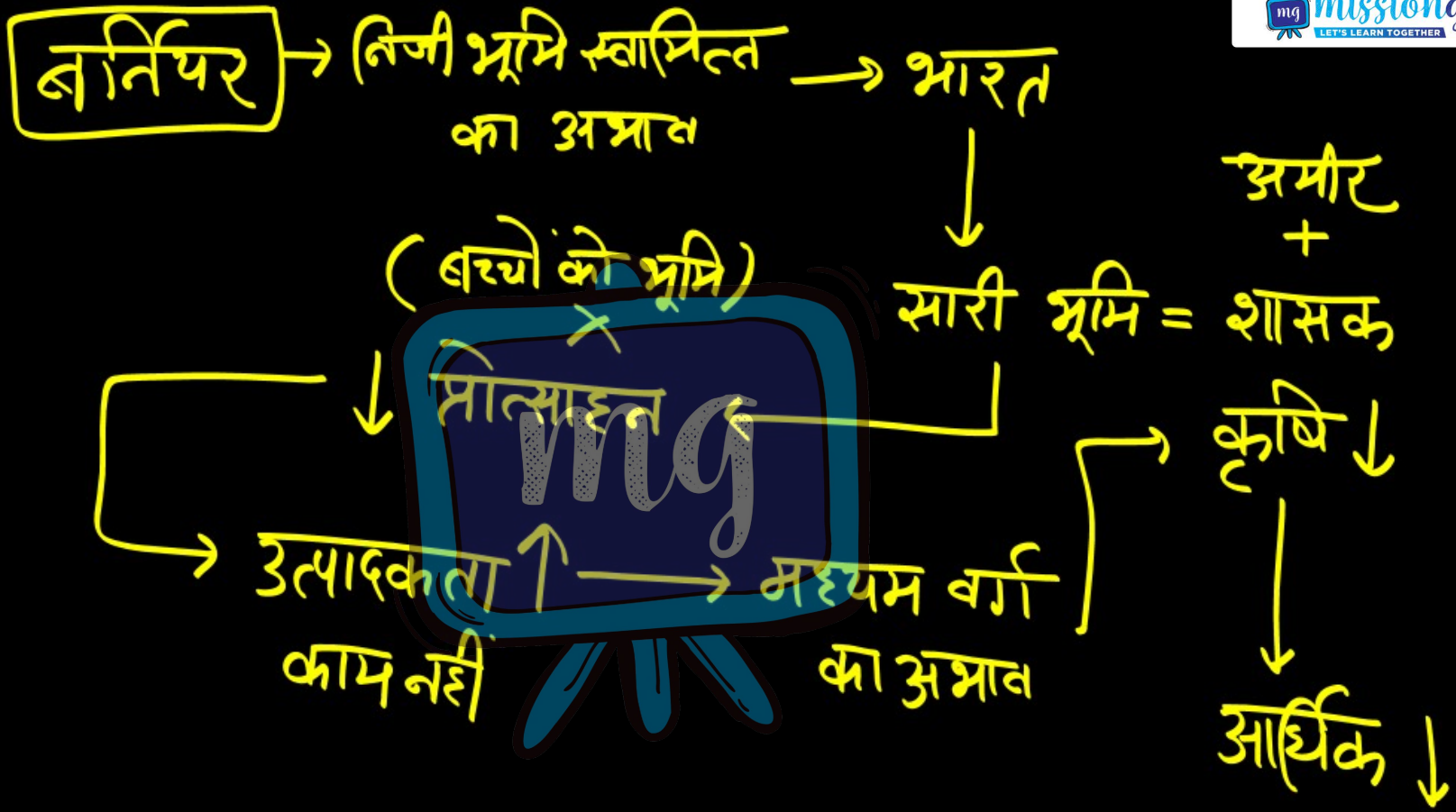

यात्रियों के नजरिए

बर्नियर मुगल साम्राज्य के बारे में लिखता है कि-

- इनका राजा ''भिखारियों व क्रूर लोगों'' का राजा था।
- इनके शहर विनष्ट तथा खराब हवा से दूषित थे।
- खेत ''झाड़ीदार'' व ''घातक दलदल'' से भरे थे।
- इन सभी का एक मात्र कारण 'राजकीय स्वामित्व' था।

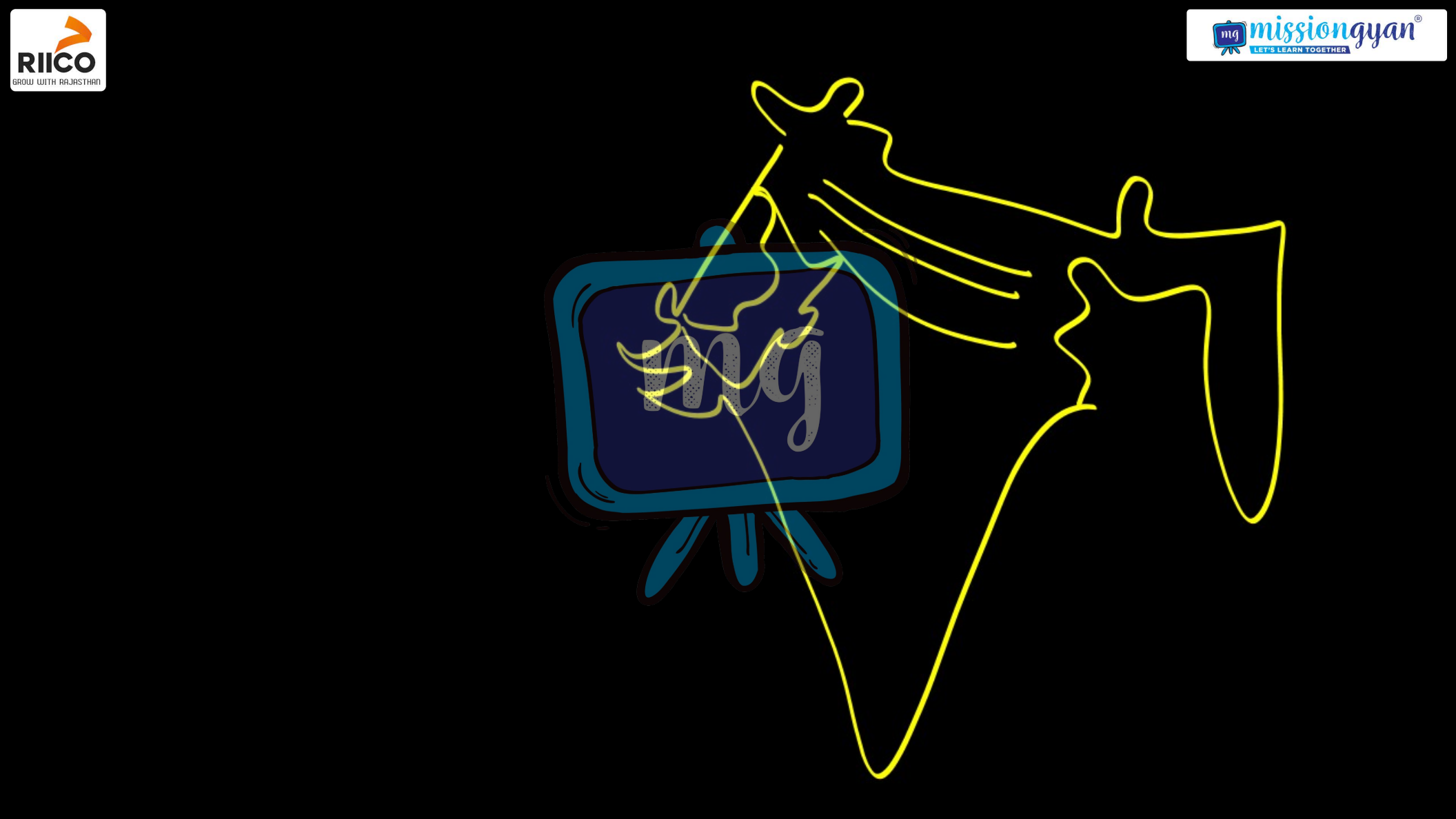

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए



ग़रीब किसान

यहाँ बर्नियर द्वारा ग्रामीण अंचल में कृषकों के विषय में दिए गए विवरण से एक उद्धरण दिया जा रहा है:

हिंदुस्तान के साम्राज्य के विशाल ग्रामीण अंचलों में से कई केवल रेतीली भूमियाँ या बंजर पर्वत ही हैं। यहाँ की खेती अच्छी नहीं है और इन इलाकों की आबादी भी कम है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए

यहाँ तक कि कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा भी श्रमिकों के अभाव में कृषि विहीन रह जाता है इनमें से कई श्रमिक गवर्नरों द्वारा किए गए बुरे व्यवहार के फलस्वरूप मर जाते हैं। गरीब लोग जब अपने लोभी स्वामियों की माँगों को पूरा करने में असमर्थ हो जाते हैं तो उन्हें न केवल जीवन-निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता है, बल्कि उन्हें अपने बच्चों से भी हाथ धोना पड़ता है, जिन्हें दास बना कर ले जाया जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए

इस प्रकार ऐसा होता है कि इस अत्यंत निरंकुशता से हताश हो किसान गाँव छोड़कर चले जाते हैं। इस उद्धरण में बर्नियर राज्य और समाज से संबंधित यूरोप में प्रचलित तत्कालीन विवादों में भाग ले रहा था, और उसका प्रयास था कि मुग़ल कालीन भारत से संबंधित उसका विवरण यूरोप में उन लोगों के लिए एक चेतावनी का कार्य करेगा जो निजी स्वामित्व की "अच्छाइयों" को स्वीकार नहीं करते थे।

यात्रियों के नजरिए

- एक भी मुगल दस्तावेज यह सूचित नहीं करता कि राज्य ही भूमि का मात्र स्वामी था।
- 16वीं शताब्दी में अकबर का सरकारी इतिहाकार अबुल-फजल भूमि राजस्व को "राज़त्व का पारिश्रमिक" बताता है।
- यह राजा द्वारा अपनी प्रजा को सुरक्षा प्रदान करने के बदले की मांग लगती है, न कि "भूमि पर लगान"।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बर्नियर भारत मे हर समस्या की जड़ किसे और क्यो मानता था?



बर्नियर ने भारतीय शासक को धिक्कारियो और क्रूर लोगो का शासक क्यो बताया?

यात्रियों के नजरिए

यूरोप के लिए एक चेतावनी

बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुगल ढाँचे का अनुसरण किया तो :

उनके राज्य इस प्रकार अच्छी तरह से जुते और बसे हुए, इतनी अच्छी तरह से निर्मित, इतने समृद्ध, इतने सुशिष्ट तथा फलते-फूलते नहीं रह जाएँगे जैसा कि हम उन्हें देखते हैं। दूसरी दृष्टि से हमारे शासक अमीर और शक्तिशाली हैं और हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी और बेहतर और राजसी ढंग से सेवा हो।